The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 10 | October 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

बैगा जनजाति के लोक देवी-देवताओं का अध्ययन

नृत्य गोपाल

शोधार्थी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय

प्रो. मनीषा शर्मा

प्राध्यापक, पत्रकारिता एवं जनसंचार संकाय, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17637925

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 27-10-2025

Published: 10-11-2025

Keywords:

बैगा जनजाति, लोक देवी-देवता, लोककथाएँ, कला, संस्कृति, परंपरा

ABSTRACT

बैगा जनजाति के लोक देवी-देवताओं का अध्ययन करने से हम उनके संस्कृति और धार्मिक अभिप्राय को समझ सकते हैं। बैगा जनजाति भारत के सबसे पुराने जनजाति समुदायों में से एक है, जो मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और कुछ अन्य राज्य में निवास करते हैं। इनकी समृद्ध संस्कृति और परंपराओं में प्रकृति और आध्यात्मिकता का गहरा समावेश है, जो उनके लोक देवी-देवताओं में भी परिलक्षित होता है। बैगा जनजाति मध्य प्रदेश के कई भागों में निवास करती है और उनके पास अपनी अनूठी संस्कृति और परंपराएं हैं। बैगा जनजाति के लोक देवी-देवताओं की प्रतिष्ठा उनके समाज में बहुत उच्च होती है। इन देवी-देवताओं की पूजा-अराधना, त्योहारों में उनका महत्व और उनसे जुड़ी कथाएं उनकी सांस्कृतिक भूमिका को दर्शाती हैं। इनके अलावा भी बैगा जनजाति के अन्य लोक देवी-देवता हैं, जिनका अध्ययन करके हम उनके समाज, संस्कृति, और आध्यात्मिक धारा को और अधिक समझ सकते हैं। यह अध्ययन हमें उनके विशेष परंपरागत अनुष्ठान, विचारधारा और जीवनशैली को समझने में मदद करेगी। यह हमें समाज में संघर्षों और समाधानों की समझ में भी मदद करेगा और विभिन्न सामाजिक विकास कार्यों को समर्थन प्रदान करने में

सहायक हो सकता है। बैगा जनजाति के लोक देवी-देवता उनकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और प्रकृति के प्रति गहरे सम्मान का प्रतीक हैं। इनकी पूजा और अनुष्ठान उनके जीवन में आध्यात्मिकता, सामाजिक एकता और पर्यावरणीय चेतना को बढ़ावा देते हैं।

प्रस्तावना

'**जन**' तथा '**जाति**' दोनों ही शब्द संस्कृत की 'जन्' धातु से निष्पन्न हैं, जिसका अर्थ है 'जन्म लेना' । पुराणों से हमें ज्ञात है कि उस युग में मध्यप्रदेश में शबर, कोल्ल, भिल्ल, कर्मार, आदि नामधारी सैकड़ों जन निवास करते थे, जिन्हें हम आज 'आदिवासी' कहते हैं।

बैगाओं की उत्पति की एक रोचक लोककथा है। उसके अनुसार इनका वंश नंगा बैगा द्वारा उत्पन्न हुआ है। बैगाओं की सात शाखाएं बिंझवार, भरोतिया, नरोतिया, राईभैना, कल्हभैना, कोंडवा और गोंड़मैना नाम से जानी जाती हैं। गोंड तथा कई अन्य जातियों में बैगा गुनिया के रूप में प्रतिष्ठित हैं गुनिया अर्थात पुजारी। बैगाओं की संस्कृति सीधी-सादी है। दैनंदिनी कामकाज का प्रमुख औजार और हथियार टंगिया अर्थात कुल्हाड़ी इनमें प्रत्येक पुरुष घर से बाहर सदैव अपने कंधे पर रखकर निकलता है।

बैगाओं की मान्यता है कि जंगल की रचना ईश्वर ने जीवन की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए की और बैगाओं को जंगल का राजा बनाकर उन्हें यह अधिकार दिया कि वो जंगल से अपनी आवयश्कता की वस्तुएं ले लें। ईश्वर द्वारा दिए इस वरदान के बाद भी वे प्रकृति पर कब्जे की भावना नहीं रखते। वन से मिली उपज से ही वे संतुष्ट हो जाते हैं। बैगा खेती करते हैं पर अन्य कई जातियों की तरह ये भी हल नहीं चलाते और हल चलाना धरती (मां) की छाती चीरने के समान मानते हैं। इसीलिए इनमें खेत जोतना निकृष्ट व्यवसाय माना जाता है और यह काम छोटी जातियों के जिम्मे है। बैगा भी खेती का क्षेत्र कुछ दिनों बाद बदलने की पद्धति से खेती करते हैं। इनमें इसे बेवर खेती कहते हैं। खेती के अलावा ये शहद इकट्ठा करना और बांस छीलकर टोकरी-टोकरा जैसी वस्तुएं बनाने का काम भी करते हैं। शिकार तथा मछली मारना भी इनका व्यवसाय था। शिकार तो अब प्रतिबंधित है पर मछली अब भी पकड़ते हैं। कई स्थानों पर ये लोग आज भी धनुष तीर से मछली का शिकार करते हैं। मछली मारने के लिए ये विष का प्रयोग भी करते हैं पर अब जाल से मछली पकड़ना ज्यादा प्रचलित है।

साजा वृक्ष पर निवास करने वाले **बड़ा देव** इनके कुल देवता हैं। बैगा और गोंड़ों के देवता समान होते हैं। फसल होने पर बैगाओं को निश्चित अनाज़ देना गांववालों के लिए अनिवार्य होता है। इसके बदले गांव की दुष्ट आत्माओं से रक्षा की जिम्मेदारी बैगाओं की होती हैं। विशेष रूप से तब जब किसी सांघातिक बीमारी का प्रकोप हो या किसी दैवी विपति की मार हो ।

उद्देश्य :

बैगा जनजाति के लोक देवी-देवताओं का अध्ययन एक महत्वपूर्ण विषय है, जिस पर और गहराई से शोध किया जा सकता है। यहां कुछ क्षेत्र हैं जिन पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं:

- **विभिन्न उप-समूहों में भिन्नता:** बैगा जनजाति के विभिन्न उप-समूहों में देवी-देवताओं की अवधारणाओं और पूजा पद्धतियों में भिन्नता हो सकती है। इन भिन्नताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- **मौखिक इतिहास और लोककथाओं का संग्रह:** बैगा समाज में देवी-देवताओं से जुड़ी कई लोककथाएँ और कहानियां प्रचलित हैं। इनके संग्रह और विश्लेषण से उनके विश्वास प्रणाली को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है।
- **देवी-देवताओं से जुड़ी कला और प्रतीक:** बैगा कला और शिल्प में देवी-देवताओं का चित्रण अक्सर पाया जाता है। इन चित्रों और प्रतीकों का अध्ययन उनके धार्मिक विश्वासों को समझने में मददगार हो सकता है।
- **आधुनिकता के प्रभाव:** आधुनिक समाज के प्रभाव से बैगा समाज के धार्मिक विश्वासों में भी परिवर्तन हो रहा है। इस बात का अध्ययन किया जा सकता है कि आधुनिकता किस प्रकार उनके लोक देवी-देवताओं और परंपराओं को प्रभावित कर रही है।
- **संरक्षण के प्रयास:** बैगा संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण के लिए क्या प्रयास किए जा रहे हैं? इन प्रयासों की सफलता का मूल्यांकन भी किया जा सकता है।

बैगा लोक देवी-देवताओं का गहन अध्ययन न केवल उनकी संस्कृति को समझने में मदद करेगा बल्कि आदिवासी समुदायों के धार्मिक विश्वासों और प्रकृति के साथ उनके संबंध को समझने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

बैगा जनजाति के लोग जिन देवी-देवताओं की पूजा करते है वे उनकी भय से उत्पन्न कल्पना शक्ति की देन है। यद्यपि ईश्वर के बारे में बैगाओं की कोई स्पष्ट धारणा नहीं हैं, पर दैवी शक्तियों पर बैगा अटूट विश्वास रखते हैं। इनके प्रमुख देवी देवता निम्न है:-

बैगाओं की लोक देवी

1.	बूढी माई	21.	लोहाझारिती
2.	बड़ी माता	22.	बंजारी माई
3.	कसलाई माता	23.	कंकाली देवी
4.	छोटी माता	24.	डोकरी देवी
5.	मरही माई	25.	धरती माता

6.	हुलकी माई	26.	पुरबनी माई
7.	देलकी माई	27.	गौ माता
8.	चैरंगा माई	28.	रात माई
9.	धुली माई	29.	ठकुराईन माई
10.	पनघट की पनिहारीन माई	30.	खैरग्राम माई
11.	अहिरनी महारानी	31.	काली माई
12.	इन्द्राणी	32.	भितरहीन माई
13.	बिन्दानी	33.	मढिया माता
14.	रासाढारिनी	34.	दूरपति दाई
15.	अंगारमोती	35.	दुलनीया दाई
16.	मरही माई	36.	गंगा माई
17.	नरबदामाई	37.	भवानी माता,
18.	अन्न माता,	38.	मारकी देवी,
19.	देशावर देवी,	39.	महरानी देवी,
20	बूटी दाई	40.	भराई देवी

लोक देवता

1.	बूढ़ा देव	16.	वन आगामी देव
2.	ठाकुर देव	17.	बुढ़ुवा देव
3.	नारायण देव	18.	बनेरा भूत
4.	भीम सेन देव	19.	बहिरवास देव
5.	नागेश्वर देव	20.	बावा बख्तर
6.	खैर खूंट मुठिया	21.	चूल्हा देव
7.	दूल्हा देव	22.	कलवा खैरों

8.	बगेश्वर देव	23.	डाग देव
9.	आजा पुरखा	24.	इतहा देव
10.	सुरुज देव	25.	गंगाधर
11.	जल देवता	26.	करुहा बीर
12.	अग्नि देवता	27.	बुंदेला देव
13.	भैंसासुर देव	28.	मरका देव
14.	घमशान देव	29.	बेहर वासी
15.	म्हारा देव	30.	सूखा देव

प्रमुख लोक देवी देवता

चंदा सूरज – बैगाओं का सच्चा साथी चाँद – सूरज है | प्रकृति को ये माता की तरह मानते है रास्ते भी इन्ही के आधार पर तय करते है इन्हे वे सड़क का देवता मानते हैं |

खूरपाट – गाँव की सीमा रेखा पर खूरपाट देवता की स्थापना की जाती है यह गाँव का रक्षक माना जाता है यह किसी तरह के रोग – राई को गाँव में प्रवेश नहीं करने देता है | पशुधन रक्षा का भार इसी देवता पर होता है |

खैराबारू – खैर माता को बैगा गाँव में "खैराबारू माता" मानकर पूजा की जाती है| समय समय पर हूम – धूप देकर पूजा की जाती है | यह गाँव की हर प्रकार से रक्षा करती है |

इसकी स्थापना गाँव के पास की जाती है |

बंजारिन माई – बैगानी में वन को 'बन' कहा जाता है जंगल की वनस्पतियों को माता तुल्य माना जाता है | ऐसे में वे पूरे जंगल को वन देवी के रूप में पूजते हैं इसलिए इस माता का नाम बंजारी माई रखा जाता है |

नागेश्वर देव – बैगाओं का निवास जंगल और पहाड़ियों पर है | यहाँ पर सर्पों का राज होता है इनकी बड़ी बड़ी बांबी होती है | कभी – कभी सर्प घरों में घुस आते हैं | खेती – बाड़ी में भी इनका दर्शन होता है उनके दंश से बचने के लिए नाग देवता की पूजा की जाती है नाग पंचमी पर विशेष अनुष्ठान कर पूजा अर्चना करते हैं |

नारायण देव – नारायण देव को बैगा कुल देवता मानते हैं | यह सभी घरों में अमूर्त रूप से पूजित होते हैं | इसे दरवाजे की चौखट की दांई ओर विराजित मानते हैं | इनकी बड़ी पूजा तीन या बारह वर्षो में एक अनुष्ठान के रूप में होता है |

दूल्हा देव – इसका स्थान बैगा जन चूल्हा के पास होना बताते हैं | नवा खाई, अन्य तीज – त्यौहार , विवाह सोहर में इनकी विशेष पूजा अर्चना की जाती है |

यह शादी-विवाह का देवता है और घर के प्रमुख कमरे के एक कोने में स्थापित किया जाता है। शादी-विवाह के समय वर-वधू इनका पूजन कर अपने आपको विपत्तियों से सुरक्षित मानते हैं। विवाह के अवसर पर दूल्हा, दुल्ही देव की पूजा की जाती है। नव वर-वधू पहली बार घर में प्रवेश करते हैं। दूल्हा-दुल्ही देव की पूजा चूल्हा के पास होती है। हरेली और नवाखानी में भी इनकी पूजा का प्रचलन है। दूल्हा-दुल्ही देव की पूजा होम, धूप और मंद के तर्पण से की जाती है।

रात माई – बैगा जन जंगलों में निवास करते हैं | अँधेरी काली रात्रि से उन्हें डर लगता है | दिन में सूरज देव की उपस्थिति में इन्हें कोई भय नहीं होता है पर रात्रि में इनका बस नहीं चलता है | ऐसे में वे रात माई की पूजा करते हैं | उनका विश्वास है कि घर में रात माई का मान प्रतिष्ठा किया जाए तो वे हमे कभी नहीं सताएगी इनका निवास स्थान घनौची के नीचे माना जाता है |

पनघट की पनिहारिन – प्रकृति माता की पूजा – अर्चना अपने लोकरीति से करते हैं ऐसे में वे जल के स्रोत नदियाँ, नरवा, झिरना आदि की पूजा -अर्चना करते हैं | घर में घट पात्रों में रखे जल को देवी मानकर आराधना करते है | इनका स्थान घनौची माना जाता है |

बूढी माई – चेचक आदि बीमारियों से रक्षा के लिए बैगा जन बूढी माई की पूजा अर्चना करते हैं | अपनी आस्था को प्रकट करते हैं |

मरही माई - हैजा कोई अन्य बिमारियों से रक्षा करने के लिए माता मानी जाती है इससे सारा बैगा चक भय खता है | इनकी मान – मनौती गाँव के पंडा द्वारा कराई जाती है |

चैरंगी माई – पशुओं को विभिन्न बीमारियों बचाने के लिए चैरंगी माई की आराधना की जाती है | कभी कभी पशुओं के चारों पैर जकड़ जाते हैं तब संध्या के समय देवी के समक्ष तेल का दिया जलाकर जल अर्पित कर देते है|

धरती माता – यानी बैगा की मां, प्यार के साथ-साथ पूजा भी की जाती है, क्योंकि देवताओं में अकेले उन्हें प्यार करने की क्षमता दी जाती है, और बैगा का मानना है कि वह उन्हें अपने बच्चों से प्यार करती है। वे उसके गर्भ से उत्पन्न हुए हैं, और जब तक वे हल से उसकी छाती को चीरकर उसका अपमान नहीं करते, तब तक वह उन्हें अपने सारे रहस्य बताती है। उसके लिए जेठ का महीना पवित्र है, क्योंकि तब-बारिश से ठीक पहले वह गर्भवती होने के लिए तैयार रहती है। कई मंत्रों में आह्वान किए गए बीड़ा में याद किए गए बिदरी समारोह में उनकी पूजा की जाती है। एक बैगा अपने सम्मान में जमीन पर कुछ बूंदें गिराए बिना शराब नहीं पीएगी।

धरती माता की नाराजी से शराब या अन्य पेय पदार्थ जहर के रूप में बदल जाते हैं। इसलिए शराब या अन्य पेय पदार्थ सेवन करने के पहले कुछ अंश अवश्य ही धरती पर छिड़का जाता है। इसी प्रकार त्यौहार या विवाह के अवसर पर जो भी भोजन तैयार किया जाता है। उसे अवश्य ही धरती माता को अर्पण करने के बाद खाया जाता है।

बैगा अक्सर धरती माता की पहचान अन्नदाई या कुटकीदाई, भोजन की देवी के साथ करते हैं, और प्यार और कृतज्ञता के साथ उनकी पूजा करते हैं। क्योंकि वह विश्व की प्राचीन माता है, और न केवल भारत में, बल्कि सभी जनजातियों द्वारा पूजा की जाती है

अग्नि देव- बैगा जनजाति के लोग अग्नि देवता की भी पूजा करते हैं। अग्नि देवता की नाराजगी से घर में आग लग सकती है, घर के सदस्य आग से जल सकते हैं। अग्नि देव को प्रसन्न करने के लिए त्यौहार या विवाह के अवसर पर जो भी भोजन तैयार किया जाता है। उस भोजन का कुछ अंश भोग के रूप में अग्नि देवता को अर्पण किया जाता है। अग्नि देव फसलों को जलने से बचाता है और घर की रक्षा करता है।

महरानी देवी- महरानी देवी की नाराजी से व्यक्ति को चक्कर आते हैं। उसकी आँखें बंद होने लगती हैं।

म्हारा देव- म्हारा देव स्वास्थ्य के देवता हैं। इनके नाराज से व्यक्ति को उल्टी - दस्त चालू हो जाते हैं।

देशावर देवी- देशावर देवी व्यक्ति को स्वस्थ्य रखती हैं। इस देवी के क्रोध से भी उल्टी दस्त होते हैं। तब गुनिया ही बतलाता है कि उल्टी दस्त कौन सी देवी के नाराज होने से हो रहे हैं।

पत्थर देव- पत्थर देव घनघोर जंगल में व्यक्ति की रक्षा करने वाले देवता हैं। इस देवता की स्थापना रास्ते के किनारे होती हैं। उस रास्ते से जो भी व्यक्ति गुजरता है। वह एक पत्थर उठाकर उस स्थान पर रख देता है। जिससे उस स्थान पर पत्थरों का ढेर लग जाता है।

पत्ता देवी- पत्थर देव के समान ही पत्ता देवी घनघोर जंगल में व्यक्ति की रक्षा करने वाली देवी है। इस देवी की स्थापना पत्थर देव के समान ही रास्ते में की जाती है उस रास्ते से जो भी व्यक्ति गुजरता है, वह एक पत्ता तोड़कर उस स्थान पर रख देता है। जिससे उस स्थान पर पत्तों का ढेर लग जाता है।

ठाकुर देव- ठाकुर देव ग्राम का देवता है। ठाकुर देव सेंमर, महुआ, साल अथवा झाड़ियों में निवास करते हैं तथा देवी प्रकोप, संक्रामक बीमारियों अथवा संकटों में रक्षा करते हैं। इन्हें प्रसन्न करने के लिए गुनिया द्वारा काली मुर्गी या सफेद बकरे की बलि तथा महुआ की शराब का तर्पण करते हैं। इस देवता के **घमसान देव मसवासी** और **सैहादेव** पुत्र हैं। ठाकुर देव की कोई आकृति नहीं

होती। गाँव में किसी भी सार्वजनिक स्थान पर सरई महुआ वृक्ष या झाड़ियों के नीचे कुछ पत्रों का ढेर मात्र होता है। ठाकुर देवी की स्थापना झोपड़ी बनाकर भी करते हैं। ठाकुर देव किसी बरूआ से सिर पर भाव के रूप में प्रकट होते है। सफेद बकरा या काला मुर्गा चढ़ाया जाता है, उसे वहीं भूना जाता है। पूजा में सम्मिलित लोग उसे खाते हैं। स्त्रियों को यह माँस खाना मना है। बचा हुआ माँस या हड्डियां वहां गड्ढा खोदकर जमीन में दबा दिया जाता है। नारियल का प्रसाद घर-घर बाँटा जाता है। ठाकुर देव की पूजा से बचे पानी की धार से गुनिया गाँव की सीमा बांध देता है। इसके भीतर कोई भी संकट नहीं आ सकता। ठाकुर देवी की पूजा मुखिया या गुनिया की सलाह से किसी भी दिन की जा सकती है।

ठाकुर देव गाँव के स्वामी और उसके मुखिया हैं। वह पीपल के पेड़ में रहता है। वह कभी-कभी सफेद घोड़े पर सवार होकर विदेश यात्रा करता है।

नरबदा माई - यह नर्मदा नदी का दूसरा नाम है। इसकी पूजा करने से धन -धान्य में वृद्धि होती है और जल की प्राप्ति होती है। जल में डूबने वालों की यही रक्षा करती है।

भैंसासुर देव- गहरे पानी में रहने वाला यह देव भैंसों की रक्षा करता है। स्थिर जल में डूबी हुई भैंसो का यही रखवाला कहा गया है। भैंस के बयाने पर सर्वप्रथम दूध इसी देवता को अर्पित किया जाता है।

बाघेश्वर देव- बाघेश्वर देव बेवर के देवता हैं। बैगाओं की बेवर खेती जंगलों में होती है। जहाँ शेर का भय सदैव बना रहता है। इसलिए बाघ को देवता मानकर उसकी पूजा करते हैं। बैगाओं का विश्वास है कि कोई भी बाघ इनको देखकर चुपचाप चला जाता है। ये शेर को अपना छोटा भाई मानते हैं। बाघेश्वर देव अन्य पशुओं से खेती की भी रक्षा करता हैं। इसका निवास झाड़ी अथवा छोटे वृक्षों में माना गया है। शेर बैगाओं के बस में है। इसी कारण बेवर शेर कभी नहीं आता। बाघेश्वर देव की पूजा में खामी होने से शेर बैगाओं को पकड़ने लगता है। बेवर में कुटकी काटते समय बाघेश्वर देव की पूजा की जाती है। होम-धूप दिया जाता है और सुअर के बच्चे की बलि चढ़ाई जाती हैं। उस दिन खाना बेवर में ही खाया जाता हैं। संयोगबश किसी बैगा को शेर खा जाता है तो सभी मिलकर बाघ धरनी पूजा करते हैं। लोहे के कीलों से बाघ की सीमा बाँध देते हैं। कीले बरूआ या गुनिया द्वारा अभिमंत्रित होती हैं।

रात माई - घनघोर काली रात्रि में यही देवी अपने भक्तों की रक्षा करती है। इसका निवास घनौची के नीचे रहता है।

अन्न माता - देवी अन्नपूर्णा को अन्न माता कहते हैं। यह फसल में वृद्धि करती है।

मरका देव- यह देव मृतकों के साथ रहकर उन्हें अच्छे रास्ते पर चलने के लिए। संकेत करते हैं तथा यमराज के न्यायालय में इन्हें पर्याप्त सहायता भी देते हैं।

भवानी माता - यह दुर्गा जी का ही दूसरा नाम है, जो बच्चों की रक्षा करती है। जो इन्हें माता शीतलामाता चेचक, छोटी माता आदि से बचाती हैं।

बूढ़ानाग देव- इसे नागेश्वर देव भी कहते हैं। यह नागमणि युक्त नाग देवता है। यह सर्पदंश से बचाता है। बाघेश्वर देव की तरह इसकी पूजा भी बेवर में तीन साल में की जाती है। इसे मादा सुअर की बलि दी जाती हैं।

घमसान देव- इन देवता को ठाकुर देव के समान ग्रामरक्षक कहा गया है। इन्हें वर्षा का देवता भी कहते हैं।

घमसान देव के व्यापक पंथ का बैगा पर अपना प्रभाव रहा है, और कुछ गांवों में वे एक खंभा खड़ा करते हैं और उनके सम्मान में एक मंच का निर्माण करते हैं, क्योंकि वह बाघों को भगाने के लिए शक्तिशाली है।

बड़ा देव या बुद्ध देव - इन्हें विश्व रचयिता माना गया है तथा कुल देवता के रूप में पूजा जाता है। मानव इसी देवता की शरण में रहकर विविध सुखों का भोग करता हैं। इस देवता को खुश करने के लिए सुअर की बलि दी जाती है। यह देव साल वृक्ष में निवास करता है।

बड़ा देव या बुद्ध देव की वर्तमान स्थिति धर्मशास्त्र पर एक प्रशासनिक उपाय के प्रभाव का एक दिलचस्प उदाहरण है। बड़ा देव को हमेशा बैगा और गोंड का प्रमुख देवता माना गया है। बैगा के रसेल कहते हैं, "उनके प्रमुख देवता, बड़ा देव हैं, जिन्हें एक साज पेड़ में निवास करना चाहिए; उनकी पूजा जेठ (मई) के महीने में की जाती है, जब बकरियों, मुर्गी, नारियल और शराब की पूजा की जाती है। उन्हें महुआ की नई फसल अर्पित की जाती है।' तो तलियापानी के एक पुराने बेवर काटने वाले बैगा ने मुझसे कहा: "बड़ा देव नारायण देव से बड़े हैं। वह हमारे परिवार का है। वह हमारा है। सबसे पहले,वह एक एंथिल में रहता था। फिर वह एक सपने में नंगा बैगा के पास गया और उसके साथ रहने लगा। नंगा बैगा उसे जंगल में ले गया और उसे एक साज के पेड़ के ठूंठ में डाल दिया। उस समय से हमने कभी भी साज को जमीन पर नहीं काटा; हम हमेशा एक स्टंप छोड़ते हैं।

लेकिन कुछ आधुनिक बैगा जो हल चला चुके हैं, इस प्राचीन देवता के बारे में बहुत अलग राय रखते हैं। बड़ा देव का मंदिर बेवर था, उनकी तीर्थस्थल साज स्टंप को सावधानी से संरक्षित किया गया था। लेकिन बेवर के गुजरने के साथ, बड़ा देव ने अपना मंदिर और अपनी शक्ति खो दी। कई शताब्दियों तक खुली हवा के देवताओं के प्रमुख होने के बाद, वह कई गांवों में एक मात्र घरेलू देवता की स्थिति में डूब गया है, नारायण देव की लातों को दहलीज पर साझा कर रहा है, या चूल्हे के पीछे दूल्हा देव के साथ रह रहा है।

छितकवार देवी- इस देवी की पूजा नवाखाई के समय की जाती है। नवाखाई के दिन खीर बनाकर साजा के पत्ता में रखकर खेत बारी में छिड़कते हैं तथा कामना करते हैं कि देवी फसल की रक्षा करें।

खैरमाई- खैरमाई की प्रतिष्ठा ठाकुर देव की मढ़ई में की जाती है। खैरमाई की पूजा तीन साल में होती है। खैरमाई गाँव को बीमारियों से बचाती है। खैरमाई को महारिन देवी भी कहते हैं। गाँव में बीमारी फैलने पर खैरमाई को ही प्रसन्न किया जाता हैं।

खेरमाई/खेरोमाई को ग्राम/गावँ खूट की प्रथम माता माना जाता है ।

प्रथमतः गावँ माता के रूप मे आदिम समुदाय द्वारा पूजे जाने वाली खेरमाई/खेरोमाई अर्थात गाँव की रक्षा, सुख, समृद्धि प्रदान करने वाली माता की स्थापना ग्राम के मध्य भाग में स्थित अधिकतर बड़, पीपल, महुआ प्रजाति के जीवनदायिनी विशाल वनस्पति/वृक्ष (झाड़) के मूल में किए जाने की मान्यताएं मिलती हैं ।

इन प्रजातियों के वृक्ष सुगमता से ग्राम के मध्य या आस-पास नहीं पाए जाने की स्थिति में अन्य वृक्षों में भी "खेरमाई"की स्थापना की जाती है ।

बंजारिन माई - बंजारिन माई वन देवी हैं। इसे घाट प्रारंभ या समाप्ति पर स्थापित किया जाता है। घाट के बीहड़ वन में जंगली जानवरों से बचाने वाली बंजारिन माई है। बनजारिन देवी एक पत्थरों का ढेर होता हैं, दिनों-दिन यह बढ़ता जाता है। रास्ते से गुजरने वाला प्रत्येक व्यक्ति एक पत्थर बंजारिन देवी को चढ़ाता है और देवी से अभयदान प्राप्त कर लेता।

नारायण देव - बैगाओं के कुल देवता नारायण देव प्रत्येक घर के द्वार में स्थापित होते हैं। नारायण देव की कोई आकृति नहीं होती; केवल पूजा का स्थान होता है। नारायण देव की पूजा का बैगा समाज में बड़ा महत्व हैं। इसे लाडू पूजा कहते हैं। पूजा करने वाले गृह स्वामी को बहुत खर्च करना पड़ता है। पूरे गाँव में धन धान्य का चन्दा करते हैं तथा पूरे समाज को आमंत्रित किया जाता है। नारायण देव की पूजा तीन साल में, सात में या बारह वर्षों में होती है।

इस प्रकार बैगा अपनी असुरक्षा की भावना से कई देवी-देवताओं की परिकल्पना कर लेते हैं। बैगा हर चीज में किसी न किसी देवता का वास मानते हैं। काली अंधेरी रात के भय के कारण बैगा रात माई की पूजा करते हैं। सार (गौशाला) में चरवाहा, गाय खूँटा दूधिया खूँट देवी दहरी माई आदि देवताओं की पूजा संध्या के समय की जाती है। गाय खूँटा की पूजा से मवेशी बीमारियों से बच जाते हैं। दूधिया खूँटा की पूजा से गाय का दूध अधिक पैदा होता हैं।

हिन्दुओं के प्रभाव के कारण हिन्दू देवी, देवताओं पर बैगा सहज श्रृद्धा करने लगे हैं। महादेव, पार्वती, ब्रह्मा, विष्णु, गणेश, राम और कृष्ण को भी मानते हैं। नवरात्रि में दुर्गा देवी के प्रति भी अपनी श्रद्धा प्रगट करते हैं। लक्ष्मी देवी बैगाओं के लिए घर की देवी हैं। मंत्र-तंत्र और गा-बजाकर, सरस्वती का सुमरन अवश्य करते हैं।

रात की देवी चूहा माई- रात की देवी चूहा माई घर में रहती है और बच्चों को खुश करती है। जब वे कहीं जाते हैं, तो वे उससे कहते हैं, "हमारे आगे आगे बढ़ो!" और जब वे वापस आते हैं, तो कहते हैं, "हमारे पीछे घर आ जाओ!" अगर वह गुस्से में है, तो वह आपको बुखार दे सकती है, लेकिन एक काला मुर्गा चढ़ाने से वह आसानी से शांत हो जाती है। निचली हिंदू जातियों में रात माई के बारे में एक बिल्कुल अलग विचार है। माघ के अँधेरे पखवाड़े में वे दिन भर उपवास रखते हैं और शाम को अपने घरों की दीवारों पर काले दीपक से रेखाएँ बनाते हैं। वे एक काले बकरे की बलि देते हैं या बोते हैं, जिसके हर हिस्से को घर के अंदर भस्म कर देना चाहिए, यहाँ तक कि कूड़े को भी वहीं दफना दिया जाता है।

पनिहारिन घर के एक कोने में पानी के घड़ों के पास रहता है। जब महिलाएं पानी लेने जाती हैं तो वह उनकी रक्षा करती हैं। वह लोगों को मिट्टी के बर्तनों को छूने और उन्हें अपवित्र करने से रोकती है। बैगा अपनी दाल और आग पर छिड़का हुआ नया चावल चढ़ाती है।

मध्या में कुछ घरों की दीवारों पर बने पवित्र मिट्टी के मंदिर जहां वे एक त्रिसूल और मोर के पंख रखते हैं, सत्धारी रहते हैं, जो घर को बीमारी से बचाते हैं।

कन्सासुर माता- लोटा (बर्तन) या थाली (पीतल की थाली) में **कन्सासुर माता** रहती है; कुल्हाड़ी में **लोहासुर माता** है; कभी-कभी **नर्बदा माई** दीवार से लटकी लोहे की जंजीर में रहती है; बासिनलता को थोड़े से बाँस में घर मिल जाता है। बत्तीबंदन, घर के बत्तीस कोने, और छोटा ओरचा, या बरामदा-छत पवित्र और खतरनाक हैं, जो सामने की दीवार से बाहर निकलती हैं। मवेशी-शेड के बीच में मवेशियों के **देवता खुत** हैं। एक मुरिया बैगा के घर में एक छोटी खुमरी होती है, जिसमें गाय की पूंछ के बालों से बनी डोरी पशु-शेड की बाहरी दीवार पर टंगी हुई थी। यह **होलेरा देव** मवेशियों की रक्षा करते हैं।

लोक देवताओं के चार स्थान

1. घर का भूमि देव
2. मढिया देव, भीत देव
3. मढिया देव खाम
4. देवली चौरा

घर का भूमि देव – घर में देवी देवताओं के लिए एक स्थान निर्धारित करना | सुरक्षा की दृष्टि से सामान्य धरातल से ऊँचा चौरी बनाना, पवित्रता और सुरक्षा की दृष्टि से स्थानीय निश्चित करना |

अपनी आस्था के देवी देवताओं को एक साथ जगह देना व आवाहन करना |

मढिया देव खाम – घर के आंगन व पीछे बाड़ी में देवस्थान निर्माण करना, एक से लेकर तीन लकड़ी के खम्भे गाड़ना | खम्भों की मजबूती और देवस्थान की पवित्रता और सुन्दरता के लिए मिटटी का चौरा निर्माण किया जाता है | एक खंभा होने पर वर्गाकार व तीन खम्भे होने पर आयताकार चौरे का निर्माण किया जाता है | तीन अलग अलग रंग लाल, सफ़ेद, ध्वज खम्भों पर लगाना, तीज त्यौहारों पर चौरा की लिपाई – पुताई करना |

देवली चौरा – ग्राम स्तर पर देव स्थान का निर्माण किया जाता है जमीन से दो – चार फीट ऊँचा चबूतरा का निर्माण किया जाता है |

ठाकुर देव के लिए सफ़ेद, काली माई के लिए काला, बुढा देव के लिए लाल ध्वज लगाया जाता है |

क्वार व चैत्र नवरात्र में जवारा बोना व प्रकृति माता की आराधना और माताओं का जसगान करना| कारी छुरी, खड़ग, खप्पर, सांट कील युक्त पीड़ा का उपयोग करते हैं और माता का झुला लगते हैं |

निष्कर्ष -

अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जानी जाने वाली बैगा जनजाति अपने पूर्वजों और देवताओं के प्रति गहरी श्रद्धा रखती है। बैगा लोग कई प्रकार के देवी - देवताओं की पूजा करते हैं| उनकी विश्वास प्रणाली समय के साथ विकसित हुई है। वे भगवान को बड़ा देव कहते हैं, जो मध्य भारत में उनके आध्यात्मिक संबंध और लंबे समय से उपस्थिति को दर्शाता है। बैगा जनजाति की सांस्कृतिक प्रथाएं जैसे बेवर खेती उनके पारंपरिक जीवन शैली को उजागर करती हैं। इसके अतिरिक्त बैगा जनजाति की कुल-देवताओं की अनूठी प्रणाली उनके पैतृक विश्वासों के साथ उनके मजबूत संबंधों को दर्शाती है। हालांकि, बैगा जनजाति को अपने जंगल के आवास से विस्थापन जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, जिससे उन्हें अपनी पहचान और जीवन शैली को बनाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ा है। सामाजिक-आर्थिक कारकों के संदर्भ में बैगा आदिवासी बच्चों पर बैगा जनजाति की

सांस्कृतिक प्रथाएँ जैसे कि उनके कुलदेवता, देवी-देवताओं से संबंधित प्रतीकों को गोदना उनकी गहरी जड़ें वाली परंपराओं और मान्यताओं को प्रदर्शित करती हैं। कुल मिलाकर बैगा जनजाति का अध्ययन उनके अद्वितीय सांस्कृतिक मूल्यों आध्यात्मिक प्रथाओं और समकालीन समाज में उनके सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करता है।

सन्दर्भ :-

- वर्मा सांवलिया बिहारी लाल, भारत में प्रतीक पूजा का आरम्भ और विकास -1974, बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना
- एल्विन वैरियर, द बैगा, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस।
- डॉ. देशपांडे मेघा, बैगा जनजाति का समाजशास्त्रीय अध्ययन, आयु पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
- डॉ. चौरसिया दिलीप, प्रकृति पुत्र बैगा, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी 2009।
- डॉ. तिवारी, मध्यप्रदेश की जनजातीय संस्कृति -1999, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।
- Swami Sankaranand: 'Pre-historians Indus', Vol. I & II.
- ऋग्वेद 7/21/4: 10/28/3 - Indus People Speak.
- रसेल और हीरालाल, सेशन। सीआईटी।, द्वितीय, पृष्ठ 85.
- https://gondwanahistory.blogspot.com/2015/10/blog-post_5.html
- https://nayapath.in/world-of-baigas-gcbagri/
- विद्यार्थी एल. पी., राय विनय कुमार, द ट्राइबल कल्चर ऑफ़ इंडिया -1985 कांसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली